उभरती हुई चुनौतियों का सामना करने के लिए वानिकी शिक्षा एवं नीति अनुसंधान

6

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् (भा.वा.अ.शि.प.) वानिकी में स्नातक एवं परास्नातक कोर्स चलाने वाले विश्वविद्यालयों को अनुदान प्रदान कर देश में वानिकी शिक्षा उन्नत करने हेतु अधिदेशित है। भा.वा.अ.शि.प. आवश्यकता आधारित प्रशिक्षणों के आयोजन के माध्यम से वैज्ञानिकों, प्रबंधकों तथा अनुसंधान सहायक कर्मचारियों के कौशल उन्नयन हेतु क्षमता निर्माण करने हेतु कार्यरत है।

6.1 औपचारिक वानिकी शिक्षा में सुधार करना

भा.वा.अ.शि.प. स्नातक एवं परास्नातक स्तर पर वानिकी शिक्षा प्रदान कर रहे विश्वविद्यालयों में वानिकी संकायों हेतु तकनीकी क्षमताओं के विकास एवं बुनियादी सुविधाओं के लिए अनुदान प्रदान करती है। देश में वानिकी शिक्षा प्रदान करने वाले बहुत से विश्वविद्यालयों हेतु निधि भा.वा.अ.शि.प. मार्गदर्शन के अनुसार प्रदान की जाती है।

व.अ.सं., विश्वविद्यालय

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली ने वन अनुसंधान संस्थान को सम विश्वविद्यालय का स्तर प्रदान किया है, देखिए नोटिफिकेशन नं. एफ. 9–25/89–यू.3 दिनांक 6.12.1991।

सम विश्वविद्यालय का स्तर पाने के बाद से संस्थान के शैक्षणिक कार्यकलाप अत्यधिक बढ़ गए हैं तथा वानिकी, पर्यावरण एवं अन्य विषयों में शोध एवं शिक्षा अधिक अर्थपूर्ण एवं सक्षम रूप में पोषित हो रही है। वन अनुसंधान संस्थान सम विश्वविद्यालय नियमित आधार पर निम्न शैक्षणिक पाठ्यक्रम चला रहा है :

- वानिकी, पर्यावरण प्रबंधन, काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा कोशाधु एवं कागज प्रौद्योगिकी में 2 वर्ष का एम.एस.सी. कोर्स।
- सुगंध प्रौद्योगिकी में 1 वर्षीय परास्नातक डिप्लोमा।

व.अ.स. विश्विद्यालय के वार्षिक खेलकूद

भा.वा.अ.शि.प. (मुख्यालय) तथा इसके संस्थानों के अधिकारीगण, वैज्ञानिकगण व्याख्यान देकर एवं शोध प्रबन्धों का पर्यवेक्षण कर शोध छात्रों को मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। 10 से 18 मार्च 2016 तक विश्वविद्यालय ने वार्षिक खेलों का आयोजन किया।

6.2 विश्वविद्यालयों का प्रत्यायन

प्रत्यायन उच्च संस्थागत गुणवत्ता सुनिश्चित करने की एक प्रक्रिया है तथा शैक्षणिक स्तर को सुधारने एवं अनुरक्षति करने हेतु एक औजार है। प्रत्यायन प्रक्रिया न केवल शिक्षा की गुणवत्ता एवं उपयुक्तता को सुधारती है अपितु देशभर में बहुत से विश्वविद्यालयों द्वारा चलाए जा रहे पाठ्यक्रम, पाठ्यचर्या/कार्यक्रम में एकरूपता लाती है। भा.वा.अ.शि.प. के साथ पूर्व में प्रत्यायित 14 विश्वविद्यालयों के पुनर्प्रत्यायन और 4 नए विश्वविद्यालयों के प्रत्यायन की प्रक्रिया प्रगति पर है। वर्ष 2015–16 के दौरान भा.वा.अ.शि.प. के मूल्यांकन दल ने निम्न 6 विश्वविद्यालयों का दौरा किया जिसमें उनके द्वारा प्रस्तुत स्वमूल्यांकन रिपोर्ट के आकड़ों की वैधता के आकलन किया गया :

- एच.एन.बी. गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (उत्तराखण्ड)
- उड़ीसा कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर (ओडिशा)
- डॉ. वाई.एस. परमार विश्वविद्यालय, सोलन (हिमाचल प्रदेश)
- सैम हिगिनबोटम कृषि तकनीकी एवं विज्ञान संस्थान, इलाहाबाद
- उत्तर बंगा कृषि विश्वविद्यालय, कूच बिहार (पश्चिम बंगाल)
- डॉ. बी.एस.एस. कोंकण, कृषि विद्यापीठ, डपोली (महाराष्ट्र)

भ.वा.अ.शि.प. के मूल्यांकन दल द्वारा वानिकी महाविद्यालय, डॉ वाई. एस परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौनी, सोलन हिमाचल प्रदेश का दौरा

6.3 अनुसन्धान एवं विस्तार के साथ वानिकी शिक्षा की नेटवर्किंग

शिक्षा निदेशालय

अप्रकाष्ठ वन उपज क्षेत्र में अंतराल एवं चुनौतियों के आकलन हेतु भा.वा.अ.शि.प. संस्थानों तथा भा.वा.अ.शि.प. द्वारा प्रत्यायित राज्य कृषि विश्वविद्यालयों के सहयोग से राष्ट्रीय स्तर पर एक नेटवर्किंग परियोजना शुरू की गई है।

परियोजना कार्य जारी रखने हेतु नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी; शेर–ए–कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर, एच.एन.बी. गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर तथा तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, मेट्टूपलायम को निधि प्रदान की गई।

वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून

काष्ठ विज्ञान से संबंधित चैक गणराज्य के एक दल ने 15 अप्रैल, 2015 को वन अनुसंधान संस्थान विश्वविद्यालय का दौरा किया तथा उन्होंने एम.एस.सी. काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विद्यार्थियों से बातचीत की।

जर्मनी से डॉ. क्लोस वान गेडोव, डॉ. स्टीफन सैपार्ड, कनाडा, डॉ. मोहित गेरा, इ.गां.रा.व.अ., डॉ. एम.एल.कपूर, वैज्ञानिक (सेवानिवृत्त), हिमाचल कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर से प्रो. बिरेन्द्र कुमार, स्वीडिश कृषि विश्वविद्यालय, स्वीडन से प्रो. मैट्स सैंडवॉल, चैक गणराज्य से शोध छात्र श्री अभिषेक मणि त्रिपाठी द्वारा एम.एस.सी. वानिकी, एम.एस.सी. पर्यावरण प्रबन्धन एवं पी.एच.डी. स्कॉलर्स को वानिकी से संबंधित कई विषयों पर विशेष व्याख्यान दिए गए।

वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर

देशभर में जैवविविधता के उपयोग को युक्तियुक्त बनाने के लिए राज्य वन विभागों, अनुसंधान संस्थानों तथा विश्वविद्यालयों के सहयोग से वन आनुवंशिक संसाधन प्रबंधन नेटवर्क (एफ.जी.आर.एम.एन.) शुरू किया जा रहा है।

सेमीनारों/संगोष्ठियों/कार्यशालाओं प्रशिक्षणों में सहभागिता

भा.वा.अ.शि.प. तथा इसके संस्थानों के लगभग 140 वैज्ञानिकों, अधिकारियों ने देशभर में बहुत से विषयों पर विविध संगठनों द्वारा आयोजित अनेक सेमीनारों, संगोष्ठियों, कार्यशालाओं/प्रशिक्षणों/बैठकों में सहभागिता की जिसका विवरण इस प्रकार है :

भा.वा.अ.शि.प.

- यू.एन.एफ.एफ., हेतु देश की विचारधारा को सुदृढ़ करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय वार्ता हेतु वानिकी मद्दों पर परामर्शक समूह,
- जी.ई.एफ. परियोजना की बैठक,
- औषधीय एवं सगंध पौधों की 'वर्तमान चुनौतियों और सिफारिशों' पर हितधारकों की कार्यशाला,
- ग्रीन इण्डिया मिशन से संबंधित बैठक,
- रेगिस्तानीकरण से सामना हेतु संरेखित 'नेशनल एक्शन प्रोगाम' से संबंधित बैठक,
- नेशनल हैंडलूम मिशन की बैठक,
- अंतर राजकीय विज्ञान नीति मंच ने 'जैवविवधता एवं पारितंत्र सेवाएं पर ई–कॉफ्रेंस आयोजित की,
- जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय परिचालन समिति की छठवीं बैठक,

जलवायु परिवर्तन संवदेनशीलता और अनुकूलन रणनीतियों पर सरकारी क्षेत्र में कार्यरत वैज्ञानिकों एवं प्रौद्योगविदों हेतु एक सप्ताह का प्रशिक्षण कार्यक्रम

- यू.एन.डी.पी. जैवविविधता वित्त पहल (बायोफिन) का 'पारितंत्र संरक्षण एवं स्थाई विकास' पर भारत पार्श्व कार्यक्रम तथा 'समुद्र तटीय एवं समुद्री जैवविविधता के धारणीय प्रबंधन हेतु क्षमताविकास सुसाध्य करना' पर जी.आई.जैड. पार्श्व कार्यक्रम,
- तीसरा राष्ट्रीय संप्रेषण के अंतर्गत जलवायु परिवर्तन समाघातों, भेद्यता एवं अनुकूलन हेतु अध्ययन प्रारंभ करने की प्रक्रिया की शुरूआत के संबंध में जलवायु परिवर्तन समाघातों, भेद्यता एवं अनुकूलन पर कार्यशाला,
- 'डिमिस्टिफाइंग रेड' दक्षिण एशिया के लिए बचाव पर आईसीमोड क्षेत्रीय ज्ञान सहभाजन कार्यशाला,
- वानिकी क्षेत्र में भारत के आई.एन.डी.सी. के पूरा करने हेतु रणनीति पर चर्चा हेतु बैठक,
- कैलाश पवित्र भू–दृश्य हेतु वानस्पतिक प्रकार सुसंगता एवं सत्यापन पर आईसीमोड क्षेत्रीय बैठक,
- 10 से 12 दिसम्बर, 2015 तक नई दिल्ली में भारत आईसीमोड कार्यशाला,
- 14 जनवरी 2016 को नई दिल्ली में जैवविविधता वित्त पहल (बायोफिन) परियोजना पर हितधारक परामर्श,
- जे.आइ.सी.ए द्वारा आयोजित भारतीय वानिकी परियोजनाओं हेतु 'रेड+ सर्वेक्षण' पर सलाहकार बैठक।

वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून

- गंगा के लिए वानिकी मध्यस्थता की मसौदा परियोजना रिपोर्ट तैयारी पर उत्तराखण्ड हितधारकों की प्रथम परामर्शी बैठक,
- गंगा हेतु वानिकी मध्यस्थता की मसौदा परियोजना रिपोर्ट तैयारी हेतु पांच राज्यों के सभी हितधारकों की पहली शुरुआती बैठक,
- गंगा हेतु वानिकी मध्यस्थता की डी.पी.आर. तैयारी हेतु राष्ट्रीय स्तर के हितधारकों की बैठक,
- क्षेत्रीय आर्मी के ईको–टास्क–फोर्स के कार्मिकों हेतु सिल्वीकल्चर/वानिकी,
- दीमक प्रबंधन एवं काष्ठ परिरक्षण, बंजर भूमियों के पारिपुनर्स्थापन और खनित भूमियों के पारिपुनर्स्थापन पर प्रमाणपत्र प्रशिक्षण कार्यक्रम,
- भारत में देशज विकास हेतु विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पर राष्ट्रीय सम्मेलन, खनिज क्षेत्र के पुनर्स्थापन पर परामर्शी बैठक/कार्यशाला,
- जैवविविधता वित्तपहल (बायोफिन) परियोजना पर हितधारक परामर्श,
- उत्तराखण्ड राज्य विज्ञान एवं तकनीकी कांग्रेस,

आई.टी.बी.पी. वसन्त मेले में व.अ.सं. के स्टॉल पर व.अ.सं. दल

- जैवविविधता, कृषि एवं पर्यावरण पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी,
- हिमालयी औषधीय पौधों पर राष्ट्रीय कार्यशाला,
- शासन एवं विकास में अंतरिक्ष तकनीकी आधारित औजारों व अनुप्रयोगों को प्रोत्साहित करना,
- लघु स्तरीय वानिकी एवं समुदाय वानिकी तथा वन भूदृश्य की बदलती प्रकृति,
- पादप रसायन विज्ञान एवं आयुर्वेद : क्षमता एवं संभावनाएं,
- विज्ञान एवं स्वास्थ्य सुरक्षा में अनुसंधान में परिदृश्य पर राष्ट्रीय संगोष्ठी,
- गंगा पुनरूद्धार हेतु वानिकी मध्यस्थता पर डी.पी.आर. तैयारी पर राष्ट्रीय स्तर की हितधारकों की बैठक,
- औषध खोज एवं शोध में वर्तमान विचारधारा पर छठी अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, पारितंत्र सेवाओं का आर्थिक मूल्यांकन,
- राष्ट्रीय बांस डाटाबेस
- उत्पादन वृद्धि हेतु पी.एस.आई.पी.,
- भारतीय तकनीकी संस्थान, रूड़की की संस्थागत जैव सुरक्षा समिति (आई.बी.एस.सी.),
- गंगा नदी के संरक्षण हेतु संरक्षण एवं विकास परिदृश्य पर पर्यावरणीय, वन एवं वन्यजीवन समाशोधन प्रस्तावों का अनुश्रवण,
- विज्ञान, अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी का उत्थान,
- प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन पर राष्ट्रीय सम्मेलन,
- टी.बी.ओ.: आगे का मार्ग पर राष्ट्रीय कार्यशाला,
- वानिकी/पारिस्थितिकी में आर.एस. तथा जी.आई.एस. के अनुप्रयोग,
- आपदा जोखिम न्यूनीकरण में प्राकृतिक विश्व सम्पत्ति क्षेत्रों की भूमिका,
- हरित राजमार्ग रोपणियां, प्रत्यारोपण, सौंदर्यकरण एवं अनुरक्षण।

10वीं उत्तराखण्ड राज्य विज्ञान एवं प्रौद्यागिकी कांग्रेस (यू एस एस टी सी) देहरादून में व.अ.सं. के स्टाल पर श्री एस.एस. नेगी, माननीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री, उत्तराखण्ड का दौरा

वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर

- पारितंत्रीय विज्ञान एवं इसके अनुप्रयोगों में सीमाएं,
- पादप विज्ञानों तथा इसके सामाजिक समाघातों में शोध प्रवृत्तियां,
- जीन्स के जर्मप्लाजम : खाद्य सुरक्षा तथा स्वास्थ्य हेतु जैव प्रौद्योगिकी को काम में लाना,
- एम.एस. प्रौद्योगिकी एवं उदयीमान अनुप्रयोगों में सीमाएं,
- उपयोगिता विकल्पों में प्रबंधन एवं विकास,
- पादप विज्ञान में उभरती प्रवृत्तियां, आई.यू.एफ.आर.ओ. यूकेलिप्टस सम्मेलन,
- कवक विज्ञानीय शोध में चुनौतियां एवं अवसर,
- भू उपयोग योजनाओं में उदयीमान दृष्टिकोण,
- जीवन विज्ञानों, पर्यावरण एवं जीवविज्ञान में अभिनव प्रगति,
- तमिलनाडु में औषधीय पौधों का स्थिति,
- प्राकृतिक वनों में आक्रामक विदेशी प्रजातियों का वर्तमान परिदृश्य एवं संभावनाएं, खतरे, चुनौतियां एवं न्यूनीकरण,
- पर्यावरण मुद्दे : प्राथमिक स्वास्थ्य सुरक्षा में औषधीय पौधे एक तथ्यगत प्रोफाइल,
- जैवीय विज्ञान एवं शोध में वर्तमान प्रवृत्तियां,
- जैवकीय विविधता अधिनियम, 2002,
- कृषि वानिकी प्रतिदर्श : स्थापना एवं प्रबंधन,
- जीव विज्ञानीय शोधों में वर्तमान प्रगति,
- पूर्वी घाटों एवं पश्चिमी घाटों में जीव–जन्तु वैविध्य,

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलुरू

- मौसम से हो रहे अपक्षय के प्रभाव,
- यू.एन.ई.पी., पर्यावरणीय प्रभाव आकलन पैनल (ई.ई.ए.पी.),
- राष्ट्रीय वन नीति संशोधन एवं समीक्षा–पश्चिमी घाटों हेतु क्षेत्रीय हितधारक परामर्शी कार्यशाला,
- जलवायु परिवर्तन, आजीविका एवं पारिस्थितिकीय सुरक्षा हेतु वन संसाधनों का एकीकरण,
- जैवीय अनुसंधान में सांख्यिकीय तकनीकों के अनुप्रयोग,
- समुद्री जैवविविधता तथा तटवर्ती पारितंत्रों का प्रबंधन,
- इंडिया वुड 2016
- बौद्धिक सम्पदा संगठन तथा भौगोलिक संकेत पंजीयन,
- गरूड़ा एन के एन सहभागियों की बैठक 2015,
- सामाजिक नवोन्मेष फोरम,
- पूर्वी एवं पश्चिमी घाटों की जीव विविधता,
- सदाहरित पृथ्वी के लिए एक मार्ग और साधन के रूप में पादप जैवविविधता एवं वानस्पतिक प्रचुरता,
- कीटनाशक योगों की आधारभूत तकनीकियाँ,
- उच्च प्रवाह क्षमता जैवकीय डाटा विश्लेषण,
- नैनो कणों का संश्लेषण और निरूपण,
- भारत नैनो सम्मेलन।

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर

- औषधीय एवं संगध पौधों में शोध एवं विकास में वर्तमान उन्नति–एक राष्ट्रीय परिदृश्य,
- किसान–उद्योगपति बैठक,
- लाख कीट आनुवंशिक संसाधन संरक्षण की नेटवर्क परियोजना,
- भारत के औषधीय पौधों के माँग तथा आपूर्ति आकलन हेतु अध्ययन सह सर्वेक्षण,
- वन्यजीव संरक्षित क्षेत्रों के वनों एवं चारागाहों में आक्रामक अपतृण प्रबंधन,
- चयनित मंडियों में प्रमुख औषधीय पौधे की आपूर्ति एवं मूल्य श्रृंखलाओं का प्रलेखीकरण तथा भारत के राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड द्वारा कार्य करने के लिए अंतरालों एवं प्राथमिकताओं की पहचान,
- कृषि वानिकी,
- पादप, रोगजनकों, लोगों के धारणीय विकास हेतु सामग्रियां एवं विधियां,
- कृषि वानिकी प्रणालियां तथा प्रबंधन कार्य,
- जैवविविधता संरक्षण तथा ग्रामीण जीविका सुधार,

- बाँस कार्य नियमावली (मैनुअल) को अंतिम रूप देना,
- मानव जीव विज्ञान के उपकरण एवं तकनीकें।

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर

- रेगिस्तानी पारितंत्र की जीव विविधता,
- जैफ राष्ट्रीय कार्यशाला; तकनीकी शब्दावली एवं जैवविविधता में वर्तमान नवोन्मेष,
- भारत में औषधीय पौधों की मांग एवं आपूर्ति आकलन हेतु अध्ययन–सह–सर्वेक्षण,
- भारत में धारणीय विकास के संदर्भ में पर्यावरणीय शासन प्रणाली,
- जैव प्रौद्योगिकी संरक्षण तथा डी.एन.ए. बारकोडिंग,
- जैवविविधता एवं तकनीकी शब्दावली में नवीनतम नवाचार,
- विज्ञान एवं इंजीनियरिंग शब्दावली में नवीनतम नवाचार,
- जैव प्रौद्योगिकी एवं नैनोप्रौद्योगिकी,
- भारत में देशज विकास हेतु प्राकृतिक विज्ञान में प्रगति,
- जैवीय विज्ञानों, जैव प्रौद्योगिकी एवं धारणीय विकास में वर्तमान प्रगति,
- शुष्कभूमि प्रणालियों पर सी.जी.आई.ए.आर. शोध कार्यक्रम हेतु नवाचार मंच बैठक,
- खरीफ किसान सम्मेलन,
- पश्चिमी शुष्क क्षेत्र हेतु कृषि विकास,

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट

- तेईसवीं राज्य स्तरीय राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस,
- आजीविका – वानिकी मेला,
- डेस्टीनेशन नॉर्थ ईस्ट, 2016,
- एम.एस.एम. एक्सपो जोरहाट, 2016।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला

- रेगिस्तानीकरण का सामना हेतु यूनेस्को की 10 वर्षीय रणनीति पर राष्ट्रीय कार्रवाई कार्यक्रम का सरेखण,
- विज्ञान : उभरते परिदृश्य एवं चुनौतियां,
- हिमाचल प्रदेश की सतलज घाटी का संचयी पर्यावरण समाघात आकलन,
- तेदुएं के साथ सामंजस्य : हिमाचल प्रदेश राज्य वन विभाग की पारि–पर्यटन परियोजना को सामाजिक व पर्यावरणीय समाघात हेतु आकलन अध्ययन,
- संचयी पर्यावरण समाघात आकलन, सतलज की समापन बैठक,
- राष्ट्रीय वन नीति; समीक्षा एवं संशोधन,
- भारतीय हिमालय के समक्ष जलवायु परिवर्तन के मुद्दों को निपटाने की दिशा में सामूहिक प्रयासों के लिए रणनीति तैयार करने के लक्ष्य से हिमालयन पारितंत्र को बनाए रखने के लिए राष्ट्रीय मिशन,
- हिमालयन क्षेत्र में वैश्विक पर्यावरणीय परिवर्तनः विवाद, समाघात, भविष्य,
- कुल्लू जिले में एकीकृत संवेदनशीलता, खतरे एवं कठिनाईयों के आकलन पर भारत–स्विजरलैण्ड संयुक्त अनुसंधान,
- उच्च तुंगता औषधीय पादपों को बढ़ावा देना,
- हिमाचल प्रदेश के किन्नौर तथा लाहौल एवं स्पीती ट्रांस हिमालयी जिलों के संसाधन,
- पी.बी.आर. हेतु तकनीकी सहयोग समूह की पहचान तथा जैव विज्ञानीय विविधता एक्ट 2002 के ए.वी.एस. प्रावधानों के कार्यान्वयन हेतु उपकरणों, प्रविधियों, निर्देशिकाओं एवं गठनों के विकास पर संवाद,
- ई – खरीद,
- काशांग एच.ई.पी. की ई.आई.ए. / ई.एम.पी. की समीक्षा,
- एन.एम.पी.बी., भा.वा.अ.शि.प. उच्च तुंगता औषधीय पौधे।

वन उत्पादकता संस्थान, रांची

- पादप एवं जन्तु आणविक जीव विज्ञान,
- बिहार में पॉपलर लगाकर सामाजिक–आर्थिक विकास,
- मै. कोलइंडिया लिमिटेड तथा सहायक कोयला कंपनियों के पर्यावरणीय ऑडिट अध्ययन / परामर्शी कार्य पर शुरूआती–सह–मूल्यांकन बैठक,
- राज्य वन विभाग, झारखण्ड के वन राजि अधिकारियों हेतु जी. आई. एस.,
- तीसरा अंतर्राष्ट्रीय पादप शरीर विज्ञान कांग्रेस (आई.पी.पी. कांग्रेस 2015) पादप जीवविज्ञान अनुसंधान में चुनौतियां तथा रणनीतियां,
- गंगा हेतु वानिकी मध्यस्थता,
- आपदा प्रबंधन में वानिकी की भूमिका।

वन जैवविविधता संस्थान, हैदराबाद

- ऊर्जा क्षेत्र में मुख्यधारा जैवविविधता,
- धारणीय कृषि, पर्यावरण तथा जैवविविधता हेतु अपतृण विज्ञान,
- धारणीय कृषि एवं ग्रामीण आजीविका की वृद्धि हेतु एकीकृत कृषि प्रणालियां,
- औषधीय पादपों के संरक्षण, खेती तथा विपणन में वर्तमान प्रवृत्तियां – औषधि 2015,

बिहार में पॉपलर रोपण के द्वारा सामाजिक आर्थिक विकास पर कार्यशाला –तकनीकी सत्र के अध्यक्ष डॉ अश्वनी कुमार, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. देहरादून एवं उपाध्यक्ष डॉ एस.पी. सिंह, उप महानिदेशक (प्रशासन), भा.वा.अ.शि.प.(बाएं) तथा कार्याशाला में प्रतिनिधि मंडल

- राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क,
- वन भूमि अभिलेख आधुनिकीकरण,
- पारितंत्रीय प्रबंधन हेतु निर्णय सहायक प्रणाली के साथ एफ.एम, आई.एस. तथा जी.आई.एस. अनुप्रयोग,
- वन आनुवंशिक संसाधन आकलन एवं संरक्षण।

विदेश यात्राएं

शिक्षा निदेशालय

वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों की विदेश यात्रा के 40 मामलों की प्रक्रिया पूरी की गई है तथा विदेश भ्रमण हेतु उन्हें आवश्यक राजनैतिक/एफ.सी.आर.ए. क्लीएरेन्सेज प्रदान करने तथा अनुमति देने हेतु पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को भेजा गया है। भा.वा.अ.शि.प. तथा इसके संस्थानों के वैज्ञानिकों तथा अधिकारियों के विदेश दौरों का विवरण नीचे दिया गया है :

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, देहरादून

- डॉ. अश्विनी कुमार, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प. ने एशिया सी एवं आई क्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लेने हेतु 28 से 30 अप्रैल, 2015 तक फिलिपिन्स का दौरा किया।
- डॉ. अश्विनी कुमार, महानिदेशक ने 11 से 15 मई 2015 तक इक्वाडोर में 'तृतीय विश्व सागौन सम्मेलन 2015' में भाग लिया।
- श्री वी.आर.एस. रावत, वैज्ञानिक –एफ, जैवविविधता एवं जलवायु परिवर्तन प्रभाग ने बोन, जर्मनी में 1 से 11 जून 2015 तक जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र गठन सम्मेलन के विज्ञान एवं तकनीकी सलाह की सहायक संस्थान के 42वें सत्र में भारतीय प्रतिनिधि के एक सदस्य के रूप में सहभागिता की।
- डॉ. एन.एस. बिष्ट, निदेशक (आई.सी.) ने भू उपयोग विज्ञान (फॉरेस्ट प्लस) तकनीकी सहायक कार्यक्रम हेतु सहभागिता के अंतर्गत 'वन नाशन तथा वानिकी निम्नीकरण (रेड+) से कम होते उत्सर्जन पर नीति परिवर्तन' में सहभागिता हेतु 25 से 31 जुलाई, 2015 तक संयुक्त राज्य अमेरिका का दौरा किया।
- डॉ. राजीव पाण्डे, वैज्ञानिक–ई ने 'मोडिस' उत्पाद पर विशेष ध्यानाकर्षण के साथ 'सर्विर विज्ञान अनुप्रयोग' पर क्षेत्रीय प्रशिक्षण में क्षेत्रीय प्रशिक्षण कोर्स' में सहभागिता हेतु 20 से 22 जुलाई, 2015 तक काठमांडु, नेपाल का दौरा किया।
- डॉ. टी.पी. सिंह, सहायक महानिदेशक (जैवविविधता एवं जलवायु परिवर्तन) ने यू एन सी सी डी की पार्टियों के बैठक (सी ओ पी – 12) के सम्मेलन में सहभागिता हेतु 16 सितम्बर, 2015 को तुर्की का दौरा किया।
- डॉ. टी.पी. सिंह, सहायक महानिदेशक (जैवविविधता एवं जलवायु परिवर्तन), डॉ. शिल्पा गौतम, वैज्ञानिक डी और डॉ. आर. एस. रावत, वैज्ञानिक–सी, जैवविविधता एवं जलवायु परिवर्तन प्रभाग ने 21 से 28 सितम्बर, 2015 तक काठमांडु, नेपाल में रैड+ हिमालय के क्षेत्रीय कार्यक्रम की संप्रेषण, हिस्सेदारी, मॉनीटरिंग हेतु विकास रणनीतियों पर प्रथम क्षेत्रीय कार्यशाला में सहभागिता की।
- डॉ. टी.पी सिंह, सहायक महानिदेशक (जैवविविधता एवं जलवायु परिवर्तन)के 15 से 20 अक्टूबर, 2015 तक रेगिस्तानीकरण का सामना हेतु संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (यू.एन.सी.सी.डी.) के पार्टी सम्मेलन के 12वें सत्र के एक उच्च स्तरीय मिनिस्टरियल सैगमैंट में सहभागिता हेतु भारतीय प्रतिनिधिमण्डल के सदस्य के रूप में सहभागिता करने हेतु तुर्की (अंकारा) का दौरा किया।
- श्री वी.आर.एस रावत, वैज्ञानिक–एफ, जैवविविधता एवं जलवायु परिवर्तन प्रभाग ने 30 नवम्बर से 06 दिसम्बर, 2015 तक यू.एन.एफ.सी.सी. के अंतर्गत क्योटो प्रोटोकॉल हेतु पार्टियों के बैठक के रूप में पार्टी सेवाओं

के पार्टी सम्मेलन (सी.ओ.पी.) के 21वें सत्र तथा पार्टी सर्विंग के सम्मेलन के 11वें सत्र में सहभागिता करने हेतु फ्रांस (पेरिस) का दौरा किया।

- डॉ. अश्विनी कुमार, महानिदेशक, डॉ. जी.एस. गोराया, उ.म.नि. (अनुसंधान) तथा डॉ. टी.पी. सिंह, सहायक महानिदेशक (जैवविविधता एवं जलवायु परिवर्तन) ने 05 से 11 दिसम्बर 2015 तक पार्टियों के 21वें सम्मेलन (सी ओ पी) में सहभागिता हेतु फ्रांस (पेरिस) का दौरा किया।

वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून

- डॉ. एन. एस. के. हर्ष, वैज्ञानिक–जी एवं समूह समन्वयक (अनु.) ने 5 से 11 जून, 2015 को सियम रीप तथा प्रीह विहेयर, कम्बोडिया का दौरा किया। यह भ्रमण प्रीह विहेयर टैंपल के वनस्पति तथा स्थल अध्ययन तथा टा प्रोह्म टैंपल (चौथा संलग्नक) सियम रीप में स्वास्थ्य आकलन तथा वृक्षों के संरक्षण उपचार हेतु किया गया।
- डॉ. विनीत कुमार ने डी.ए.ए.डी. कार्यक्रम के अंतर्गत 01 जुलाई से 31 अगस्त 2015 तक पोलीसैक्राइड्स पर ढाँचागत अध्ययनों के क्षेत्र में कार्य हेतु टेक्निश विश्वविद्यालय, ब्राउंसविग का दौरा किया।
- डॉ. मीना बक्शी, वैज्ञानिक–ई ने 21 से 24 अक्टूबर, 2015 झांजीआंग, चीन में 'यूफ्रो यूकेलिप्टस कॉंफ्रेंस' में सहभागिता की।
- डॉ. करनपाल सिंह, वैज्ञानिक–डी ने डमीयांग, दक्षिण कोरिया में 17 से 22 सितम्बर, 2015 तक 10वें विश्व बांस कांग्रेस में सहभागिता की तथा शीर्षक ''बांस छेदक, *फ्लोओबियस क्रेसीकॉलिस* जॉर्ड के आक्रमण की प्रबलता एवं विस्तार तथा नियंत्रण'' पर एक पत्र प्रस्तुत किया।
- डॉ. मनीषा थपलियाल, वैज्ञानिक–ई ने 17 से 19 नवम्बर, 2015 तक सिलांगौर, मलेशिया में वन अनुसंधान संस्थान, मलेशिया में 'वन विज्ञान में सुव्यवस्थित समीक्षा' पर एक प्रशिक्षण कार्यशाला में सहभागिता की।
- श्री जोवेद अशरफ, वैज्ञानिक–बी ने एक परिकल्पनात्मक विचार एवं अवसंरचना विकसित करने में जो कि वन परिवर्तन पर एक पत्र का रूप प्राप्त करेगा तथा सांख्यिकीय विशेषज्ञ के रूप में 'वैश्विक पूर्व की अवैधानिक कार्यपूंजी' पर एक संगोष्ठी में भाग लेने हेतु 24 से 25 फरवरी, 2016 को क्योटो विश्वविद्यालय, क्योटो, जापान के एकीकृत क्षेत्र अध्ययन केन्द्र का दौरा किया।

वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर

- डॉ. बी, नागराजन, वैज्ञानिक–एफ ने आई.यू.एफ.आर.ओ. यूकेलिप्टस सम्मेलन 2015 में पेपर प्रस्तुतिकरण हेतु 19 से 25 अक्टूबर, 2015 तक झांगियांग, ग्वांगडोंग, चीन का भ्रमण किया।
- डॉ. मधुमिता दासगुप्ता, वैज्ञानिक–एफ ने 19 से 25 अक्टूबर, 2015 तक झांगियांग, चीन में हुए आई.यू.एफ.आर.ओ. यूकेलिप्टस सम्मेलन 2015 में हिस्सा लिया तथा पेपर (मौखिक एवं पोस्टर) प्रस्तुत किए।
- डॉ. मथीश नामबियर वीतिल, वैज्ञानिक–ई ने *मैनडूका सैक्सटा* में आर.एन.ए.आई. बढ़ाने हेत डी.एस.आर.एन.ए. काईटोसेन नैनोपार्टिकल का मूल्यांकन पर एक अध्ययन जारी रखने हेतु डी.ए.ए. डी. फैलोशिप पर 13 से 26 फरवरी, 2016 तक ओसनाब्रुक विश्वविद्यालय, जर्मनी का दौरा किया।

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलुरू

- डॉ. के.के. पाण्डे, वैज्ञानिक–जी ने 22 से 30 सितम्बर, 2015 तक ऑस्ट्रेलिया में यू.एन.ई.पी.–पर्यावरण प्रभाव आकलन पैनल (प.प्र.आ.पै.) बैठक में हिस्सा लिया।
- श्री एम. श्रीनिवास राव, वन संरक्षक और डॉ. आशुतोष श्रीवास्तव, वैज्ञानिक–ई ने 'चंदनकाष्ठ एवं औषधीय पादपों' पर सम्मेलन में सहभागिता हेतु 21 से 25 सितम्बर, 2015 को हनोई, वियतनाम का दौरा किया।

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट

- डॉ. आर.एस.सी. जयराज, निदेशक ने 21 से 28 सितम्बर, 2015 तक काठमांडु, नेपाल में रैड+ हिमालय के क्षेत्रीय कार्यक्रम के संचारण, सहभागिता तथा मॉनीटरिंग हेतु रणनीतियों के विकास पर पहली क्षेत्रीय कार्यशाला में भाग लिया।
- डॉ. आर.के. बोरा, वैज्ञानिक–एफ ने ताइपेई में वर्ल्ड इंसेंस रिपोपुलेशन एलाएंस ताइवान संगठन द्वारा 17 नवम्बर, 2015 में आयोजित वर्ल्ड इंसेंस रिपोपुलेशन टैकनिकल एण्ड एकेडमिक डिस्कशन फोरम में सहभागिता की।

जलवायु परिवर्तन तथा कार्बन न्यूनीकरण पर सरकारी क्षेत्र में कार्यरत
वैज्ञानिकों और प्रौद्योगविदों के लिये एक सप्ताह का प्रशिक्षण कार्यक्रम

6.4 वैज्ञानिक एवं प्रबंधन कैडर क्षमता निर्माण (आयोजित प्रशिक्षण)

प्रशिक्षण का उद्देश्य अधिक एवं नवीन ज्ञानार्जन, क्षमता तथा कौशल विकसित करना तथा ऐसे व्यवहारों को अंगीकृत करना है जिससे वर्तमान कार्य में कार्यकुशलता में सुधार हो सके। भा.वा.अ.शि.प. देहरादून और उसके संस्थानों द्वारा आयोजित विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विवरण निम्नलिखित है:

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्

- आपदा प्रबंधन में वन की भूमिका,
- भा.वा.अ.शि.प. देहरादून में आपदा प्रबंधन में वनों की भूमिका पर प्रशिक्षण,
- जलवायु परिवर्तन एवं कार्बन न्यूनीकरण पर प्रशिक्षण कार्यक्रम,
- भारत में रैड+ : मुद्दे एवं चुनौतियां पर प्रशिक्षण कार्यशाला,
- जलवायु परिवर्तन, संवेदनशीलता तथा अनुकूलन रणनीतियों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम।

वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून

- सुगंधित तेल, इत्रसाजी तथा सुगंध चिकित्सा,
- मीलिया, आंवला तथा औषधीय पौधों हेतु विशेष संदर्भ के साथ कृषिवानिकी प्रारूपों का विकास,

आपदा प्रबन्धन में वन की भूमिका पर भा.वा.अ.शि.प., देहरादून में प्रशिक्षण

- उन्नत काष्ठ परिष्करण प्रणाली,
- खनित भूमियों का पारिस्थितिकीय पुनर्स्थापन,
- बांस हस्तशिल्प का निर्माण,
- लेन्टाना कमारा से हस्तनिर्मित कागज,
- आपदा जोखिम प्रबंधन में वानिकी की भूमिका,
- वन परिवर्तन (ट्रांजिशन),
- दीमक प्रबंधन तथा काष्ठ परिरक्षण,
- वानिकी प्रबंधन,
- समुद्रतटीय पारितंत्र का संरक्षण तथा प्रबंधन,
- वनाग्नि आपदा जोखिम न्यूनीकरण,
- राष्ट्रीय कार्ययोजना कोड, 2014,

सामाजिक वानिकी तथा पारि–पुनर्स्थापन केन्द्र, इलाहाबाद

- बांस उगाना, प्रबंधन तथा विपणन पर किसानों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम।

वन आनुवंशिकी एवं वृक्ष प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर

- वन आनुवंशिक संसाधन प्रबंधन,
- जैव पूर्वेक्षण – राज्य वन विभागों की भूमिका,
- कृषि वानिकी प्रतिदर्श – स्थापना तथा प्रबंधन,
- विश्वविद्यालयों/महाविद्यालयों/अनुसंधान संस्थानों में कार्यरत वैज्ञानिकों, अनुसंधान अध्येताओं, विविध पादप आधारित उद्योगों के कार्मिकों तथा आयुर्वेदिक चिकित्सकों के अनुसंधान कार्यकलापों पर जैवीय विविधता एक्ट, 2002 के विविध निहितार्थ; कैज्यूरिना कृंतकों का वानस्पतिक प्रवर्धन पर व्यावहारिक प्रशिक्षण,
- नर्सरी एवं खेतों में जैव–उर्वरक उत्पादन तथा अनुप्रयोग पद्धतियां।

"जैव पूर्वेक्षण–राज्य वन विभागों की भूमिका" पर भा.व.स. अधिकारियों के लिये, व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर में दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बंगलुरू

- वन उत्पादों तथा उपयोजनों में उन्नति,
- काष्ठ विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी,
- काष्ठ पहचान तथा काष्ठ बचाव
- महत्वपूर्ण प्रकाष्ठों की क्षेत्र पहचान,
- काष्ठ बचाव,
- चन्दन काष्ठ, बीज बुआई, नर्सरी तथा रोपण तकनीकियां,
- काष्ठ विज्ञान एवं वानिकी,
- कम्प्यूटर अनुप्रयोग।

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान ,जबलपुर

- वनीकरण के जरिए कार्बन पृथक्करण।

वानिकी अनुसंधान एवं मानव संसाधन विकास केन्द्र, छिन्दवाड़ा

- पर्यावरणीय जागरूकता,
- जैव उर्वरक तथा आर्गेनिक फार्मिंग,
- कृषि वानिकी/एन.टी.एफ.पी. पैदावार, प्रक्रमण तथा मूल्य वृद्धि/वनों से प्राप्त खाद्य,
- वन पौधशालाओं तथा रोपणियों में रोग एवं नाशी कीट और उनके निवारक उपाय,
- परती भूमि उपयोजन,
- परागणकर्ता/किसान मित्र कीट तथा जैव कीट नाशक,
- *बी. लेंजन* चिरौंजी की पौधशाला तकनीकें,
- महुआ/जैव उर्वरकों तथा जैव कीट नाशकों को एकत्र करने की पद्धतियां।

शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर

- नाजुक रेगिस्तानी पारिपद्धति के सतत् विकास हेतु एकीकृत पद्धतियां।

वन उत्पादकता संस्थान, रांची

- राष्ट्रीय बांस डाटाबेस वैब पोर्टल,
- कृषि, हरियाली, प्रशिक्षण क्षमता निर्माण तथा आय उत्पत्ति कार्यक्रम,
- झारखण्ड राज्य तथा उसके आस–पास के राज्यों के किसानों के लिए बांस उगाना, प्रबंधन तथा विपणन।

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट

- बांस का प्रसारण नर्सरी प्रबन्धन, व्यवसायिक खेती, मूल्यवर्धन,

व.उ.सं., राँची में "कृषि, हरियाली, प्रशिक्षण क्षमता निर्माण एवं आय उत्पत्ति कार्यक्रम" के अन्तर्गत किसानों का तीन दिवसीय प्रदर्शन दौरा

- बांस आधारित जीविका सृजन तथा अन्य वृक्ष प्रजातियां,
- एन.ई. की महत्वपूर्ण वन प्रजातियों का आनुवंशिक सुधार; अगर काष्ठ, बीज प्रौद्योगिकी; बांस का नर्सरी प्रबंधन और खेती; वन पौधशाला/रोपणी के रोग और उनका प्रबंधन; वानिकी में कृमिखाद तथा जैवउर्वरक अनुप्रयोग; वानिकी तथा सांख्यिकी में जी आई एस के अनुप्रयोग,
- बांस प्रसारण तथा नर्सरी प्रबंधन पद्धतियां, विभिन्न उत्पाद विकास कार्यकलाप तथा बांस उपचार,
- लाख खेती, बांस प्रवर्धन की तकनीकें तथा नर्सरी प्रबंधन पद्धतियां, विभिन्न उत्पाद विकास कार्य तथा बांस उपचार,
- अगरकाष्ठ,
- कौशल उत्थान तथा उद्यमिता विकास हेतु बांस प्रवर्धन, संरक्षण तथा मूल्य वर्धन,
- बांस हस्तशिल्प एवं जेवर,
- बांस पौधशाला रोग प्रबंधन तथा जैव–कीटनाशक अनुप्रयोग,
- बांस उपचार तकनीकी,
- कम मूल्य कृमिखाद तकनीकें,
- बांस तथा बेंत की खेती तथा बांस चारकोल का निर्माण।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला

- अतीश, बन ककरी, चोरा एवं अन्य महत्वपूर्ण बहुमूल्य शीतोष्ण औषधीय पौधों की खेती,
- औषधीय पौधों में नाशीकीट एवं रोगों के नियंत्रण हेतु बचाव तकनीकें,

हि.व.अ., शिमला में उत्पादकता वृद्धि हेतु रोपण स्टॉक सुधार कार्यक्रम

भदरवाह जम्मू में "अतीश, बन ककरी, चौरा और अन्य महत्वपूर्ण बहुमूल्य शीतोष्ण औषधीय पादपों की खेती" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

- जल संरक्षण, स्वच्छता, स्वास्थ्य विज्ञान तथा कार्बनिक,
- उत्पादकता वृद्धि हेतु रोपण स्टॉक सुधार कार्यक्रम,
- क्षमता निर्माण कार्यक्रम,
- परती भूमियों का पारिपुनर्स्थापन,
- जुनीपर के नाशीकीट तथा रोगों का प्रबंधन,
- हिमालयी औषधीय पौधों की खेती।

वन जैवविविधता संस्थान, हैदराबाद

- कृषि वानिकी प्रतिदर्श,
- गाँवों के एक समूह में औषधीय पौधों की खेती,
- वन आनुवंशिक संसाधन आकलन तथा संरक्षण,
- कृषिवानिकी में औषधीय पौधों की खेती।

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद् तथा इसके संस्थानों द्वारा आयोजित प्रशिक्षणों का सारांश नीचे दिया गया है :

क्र.सं.	मुख्यालय/संस्थान	प्रशिक्षणों की संख्या	अवधि (दिनों में)
1.	भा.वा.अ.शि.प, देहरादून	4	15
2.	व.अ.सं., देहरादून	17	107
3.	व.आ.वृ.प्र.सं, कोयम्बटूर	8	21
4.	का.वृ.प्रौ.सं., बंगलुरू	11	220
5.	उ.व.अ.सं, जबलपुर	12	17
6.	व.व.अ.सं., जोरहाट	20	34
7.	हि.व.अ.सं. ,शिमला	15	28
8.	व.उ.सं., रांची	4	13
9.	व.जै.सं., हैदराबाद	7	15
10.	शु.व.अ.सं, जोधपुर	1	5

6.4 नीति अनुसंधान

देश में भा.वा.अ.शि.प. वानिकी शिक्षा तथा अनुसंधान को चलाने वाला शीर्षस्थ संस्थान है। अतः वानिकी तथा वन्यजीव के क्षेत्र में नीति अनुसंधान का संचालन भा.वा.अ.शि.प. के महत्वपूर्ण अधिदेशों में से एक है। इस संबंध में एक समिति बनाई गई थी, देखे पत्र सं. 12–1/2006–एफ.पी., दिनांक 23 अगस्त, 2006। यह 30 मार्च, 2010 को वानिकी तथा वन्यजीव के आर्थिक, सामाजिक तथा पर्यावरणीय पहलुओं से संबंधित मुद्दे/विषय क्षेत्रों को विवेचित करने तथा अंतिम रूप देने हेतु तथा वानिकी तथा वन्य जीवों से संबंधित आर्थिक, सामाजिक तथा पर्यावरणीय पहलुओं पर अनुसंधान करने के लिए भा.वा.अ.शि.प. के संस्थानों या चिन्हित विशेषज्ञ निकायों/संगठनों को निर्देशित करने के लिए पुनरीक्षित की गई।

महानिदेशक, वन तथा विशेष सचिव, एम.ओ.ई.एफ. व सी.सी., नई दिल्ली की अध्यक्षता में 5 जनवरी 2016 को इन्दिरा पर्यावरण भवन, जोर बाग, नई दिल्ली में भा.वा.अ.शि.प. की अनुसंधान नीति समिति की छठी बैठक का आयोजन किया गया।